हाथी की लड़की

प्राचीन भारतीय कथा

हाथी की लड़की

प्राचीन भारतीय कथा
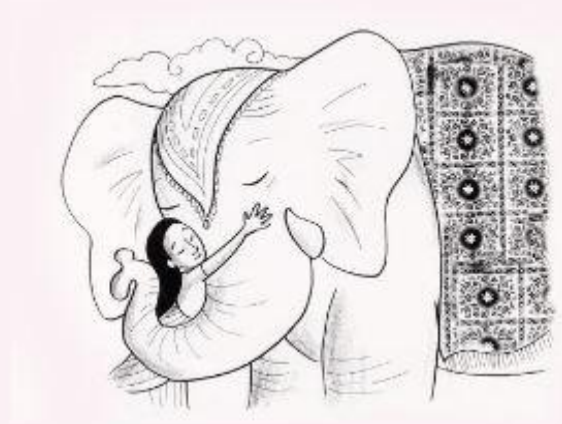
हाथी की लड़की

भारत, 122 ईसा के बाद.

मेरी पहली माँ एक हाथी थी. उसने मुझे नहलाया और अपनी सूंड से मुझे पकड़ा. जब मुझे भूख लगी, तो उसने मुझे घास और पत्ते खिलाए.

अपने जीवन के पहले दो वर्षों के लिए मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैं एक हाथी हूं.

एक दिन, हाथी के शिकारियों का एक समूह उस नदी पर आया जहाँ मेरी हाथी-माँ और मैं नहा रहे थे.

शिकारियों ने हमें घेर लिया और उन्होंने अपने तीर उठाए.
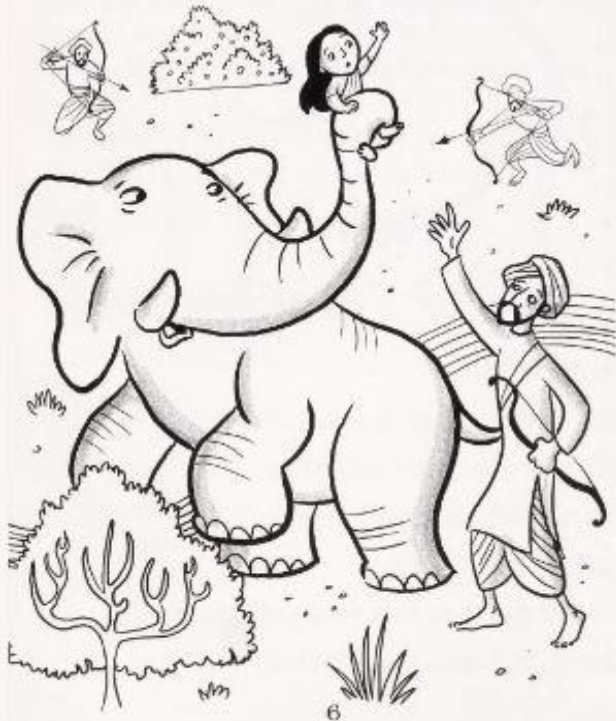
मेरी हाथी-माँ ने अपनी सूंड से मुझे पकड़ा और मुझे ऊँचा उठाया.

"यह तो एक छोटा बच्चा है!" एक शिकारी ने हांफते हुए कहा. "एक बच्ची!"

"वो कोई अनाथ बच्ची होगी," दूसरे ने कहा. "हम उसके साथ क्या करें?"

समूह के नेता ने ललकारा और कहा, "हम हाथी को मार डालेंगे और लड़की को गुलाम जैसे बेंच देंगे."

एक और शिकारी आगे बढ़ा. "मेरे चार बेटे हैं," उसने कहा. "लेकिन मेरी पत्नी हमेशा से एक बच्ची चाहती है. मैं इस बच्ची को अपने घर ले जाऊंगा."

मैं बहुत रोई पर उन्होंने मुझे हाथी से छुड़ाया. मैं इतना रोई कि मेरे नए पिता के पास हाथी को घर ले जाने के अलावा कोई चारा ही नहीं बचा.

मेरे नए माता-पिता गरीब थे, लेकिन वे दयालु थे. उन्होंने मुझे अपनी बच्ची की तरह ही प्यार किया. उन्होंने मेरा नाम लाली रखा.

मेरी नई माँ को एक बच्ची होने की खुशी थी, भले ही मेरी पहली आवाज़ हाथी की आवाज़ जैसी थी.

मेरी हाथी-माँ, भुवना, मेरे माता-पिता के घर के पीछे की पहाड़ियों में घूमती थी.

"राऊ.......... !" वो चिल्लाती थी.
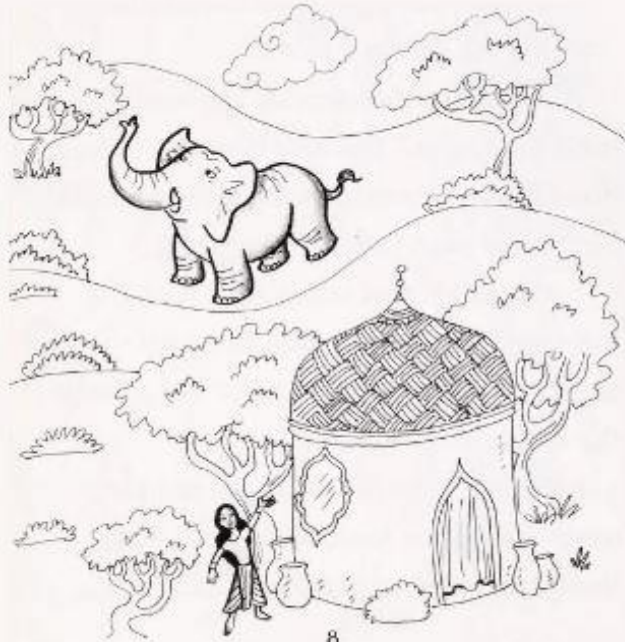
"मारू.......... !" मै उसे उत्तर देती थी.

शुरु में मेरे माता-पिता को मेरी हाथी की आवाज़ मज़ेदार लगी. लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ी हुई उन्होंने मुझे डांटा.

"अब हाथी की आवाज़ मत निकालना," मेरी माँ ने आज्ञा दी. "तुम एक लड़की हैं - एक युवा महिला हो."

लेकिन मैंने उनकी बात नहीं सुनी. मैं एक बहुत जिद्दी लड़की थी.

भुवना भी जिद्दी थी. मेरे पिता ने उसे गाड़ी खींचने के लिए प्रशिक्षित करने की कोशिश की. लेकिन जब भी उसे किसी वैगन के साथ जोड़ा जाता, तब भुवना केवल गोल-गोल चक्करों में घूमती थी.

जब उन्होंने उसे सूंड से ईंटों को ढोना सिखाया तो उसने ईंटों को हवा में फेंका और वापस गिरने पर उन्हें पकड़ा.

हमारे पेड़ों पर एक भी पत्ता नहीं था - क्योंकि भुवना ने सभी पत्ते खा लिए थे. हमारे मैदान में घास भी नहीं थी - क्योंकि भुवना उसे खा गई थी. और उसके बाद भी वो भूखी रहती थी.

"हम इस हाथी के साथ क्या करें?" मेरे पिता ने दुखी होकर कहा. "वह काम नहीं करती है. और वो हमारे घर की सब चीज़ें खा गई है!"

जवाब में, भुवना ने हमारे घर की छत पर बिछी घास भी खा डाली.
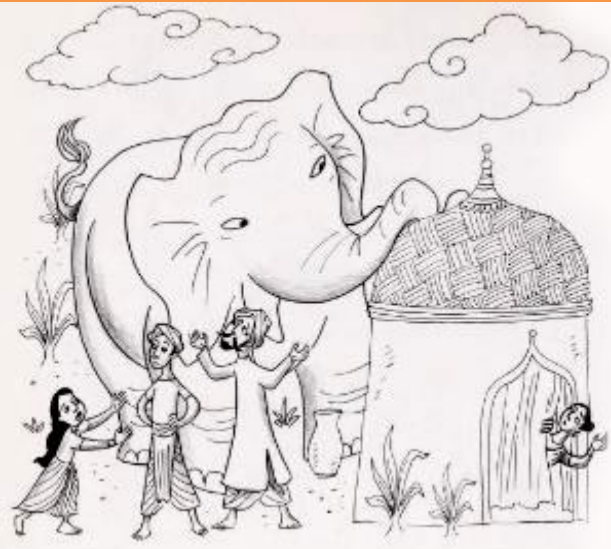
"हमें उसे बेचना पड़ेगा," मेरे पिता ने कहा.

"हाँ," मेरे भाई समीर ने सहमति व्यक्त की. उसे भुवना शुरू से ही नापसंद थी.

"आप उसे बेच नहीं सकते हैं!" मैं चिल्लाई. "वह मेरी है! मारू.......... !"

क्रूर रानी

भुवना के साथ समय बिताने के अलावा मेरी सबसे पसंदीदा चीज त्योहारों के लिए राजधानी, उरेयूर जाना था. वहां मैं शाही नर्तकियों को घंटों निहारती थी. नाचते समय उनके सोने की लहंगे झिलमिलाते थे.

मैं भी एक नृतकी बनना चाहती थी. हर त्योहार के बाद, मैं अपनी झोपड़ी के बाहर गोल-गोल नाचती थी. जब कभी भी मैं नाचती थी तो ऐसा लगता था जैसे भुवना मुस्कुरा रही हो.

लेकिन मेरे माता-पिता को वो देखकर गुस्सा आता था.

"तुम्हारे नाचने से धूल उड़ती है," पिता ने मुझे डाँटा.

मेरी माँ ने मेरी तरफ देखा. उनकी आँखें कोमल थीं. "तुम नर्तकी बनने के अपने सपने को भूल जाओ," माँ ने कहा. "हम लोग गरीब हैं. तुम कुछ काम करना सीखो, नाचना नहीं."

"मैं अपने सपने को कभी नहीं छोड़ूंगी!" मैंने कहा. मैं एक जिद्दी लड़की थी.

लेकिन मैंने काम भी किया. मैंने चपातियाँ बनाई, और फल इकट्ठे किए. मुझे अपने बड़े भाइयों से ईर्ष्या थी.

समीर को छोड़कर सभी शादीशुदा थे. उनकी पत्नियां उनका सब काम करती थीं.

समीर अभी भी हमारे साथ रहता था. मैं उससे प्यार करती थी, लेकिन मुझे यह पक्का नहीं पता था कि क्या वो भी मुझसे प्यार करता था. भुवना भी उससे प्यार करती थी. जब भी वो समीर को अपनी सूंड से सहलाती थी, तब समीर गुस्सा होता था.

एक दिन, समीर और मैं जामुन इकट्ठा कर रहे थे. तब हमने घंटियों की आवाज़ सुनी. भुवना ने तुरंत पेड़ के पत्ते खाने बंद कर दिए और उस आवाज़ को सुना.

तभी मुझे एक परिचित आवाज़ सुनाई दी. "राऊ.......... !"

"हाथी!" मैंने कहा.

भुवना ने अपने पैरों को पटका और फिर उसने बुलंद आवाज़ में जवाब दिया.

"वो राजा और रानी है!" समीर ने सड़क पर देखकर कहा.

मैंने समीर की बाँह पकड़ ली. "रानी?" मैंने पूछा.

राजा, करिकला चोला, एक दयालु व्यक्ति थे. लेकिन मैंने सुना था कि उनकी रानी एक क्रूर महिला थीं.

वो बिना किसी कारण के लोगों को जेल भेज देती थी.

"रानी के बारे में यह कहानियों सच नहीं है," समीर ने कहा.

मैंने पेड़ों के बीच में से देखा. एक भव्य परेड सड़क पर धीरे-धीरे चली आ रही थी. शाही हाथी ने बैंगनी और सुनहरा रेशमीं कम्बल पहना था.

रानी, हाथी की पीठ पर सवार थी.

मैं एक पेड़ के पीछे छिप गई. "छुप जाओ," मैंने समीर से कहा. लेकिन वो बेखौफ, बिना डरे खड़ा रहा.

भुवना ने अपने कानों को हिलाया और वो बुलंद आवाज़ में चिल्लाई. वो एक अन्य हाथी को देखकर उत्साहित थी.
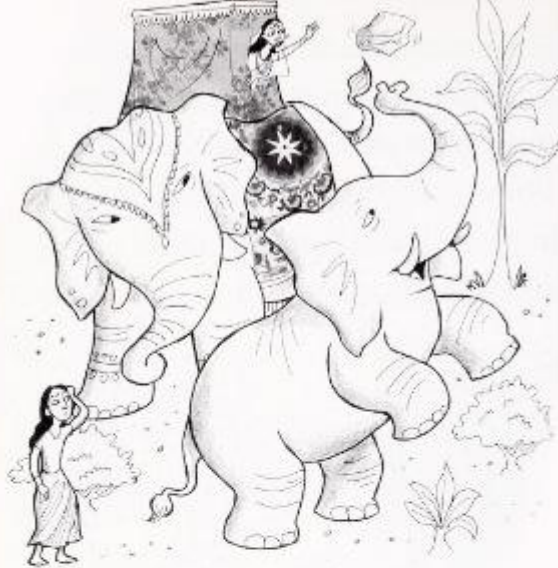
"चुप रहो!" मैंनें आदेश दिया.

लेकिन भुवना ने मेरी बात नहीं मानी. वो सड़क की ओर बढ़ी और शाही परेड की राह में खड़ी हो गई.

"रास्ते से हट जाओ!" रानी ने आदेश दिया क्योंकि शाही हाथी रुक गया था.

लेकिन भुवना वहां से नहीं हिली. उसने अपनी सूंड से हवा में एक पत्थर उछाला. फिर उसने पत्थर को अपनी सूंड से पकड़ा.

मैं कराह उठी. ऐसे करतब करने पर मेरे पिता अक्सर भुवना को सज़ा देते थे. और मेरे पिता रानी चोला की तुलना में बहुत कम क्रूर थे.

लेकिन रानी मुस्कुरा दी. उसने ताली बजाई. "अद्भुत!" वो चिल्लाई.

मैं विस्मय में उन्हें घूरती रही.

रानी चोला ने अपना हाथ आगे बढ़ाया.

भुवना ने उसे अपनी सूंड से रानी के हाथ को छुआ.

"एक अद्भुत हाथी," रानी ने कहा. "उसकी त्वचा कितनी चिकनी है. और वो करतब दिखा सकती है! वो एक अच्छी शाही हाथी बनेगी."

वो बहुत बुरा होगा क्योंकि भुवना मेरी थी, मैंने सोचा.

परेड को जाने देने के लिए भुवना एक तरफ हट गई. वो दुखी मन से चिल्लाई. शाही हाथी भी जवाब में चिल्लाया.

"अलविदा, हाथी!" रानी ने जाते हुए कहा.
मैं चिंतित थी, "भुवना!" मैंने कहा.

उसने मेरी बात नहीं सुनी. भुवना शाही हाथी और रानी चोला की ओर घूरती रही. मेरा दिल ईर्ष्या से धड़कने लगा. मुझे पता था कि भुवना अन्य हाथियों के बिना बहुत अकेला महसूस करती होगी. पर क्या मैं उसे खुश रखने के लिए पर्याप्त नहीं थी?

"मारू..........!" मैं चिल्लाई.

भुवना ने मुश्किल से मेरी तरफ देखा. उसे पता था कि मैं एक हाथी नहीं हूं.

"घर चलो, लाली," समीर ने आदेश दिया. उसने भी शाही परेड को सड़क पर आगे बढ़ते हुए देखा.

मैंने अपनी टोकरी उठाई और घर की ओर चली. फिर सुबह भुवना गायब हो गई.

"हमें भुवना को ढूंढना होगा!" मैंने अपने परिवार से कहा. "वो एक हाथी है. वो आसानी से कहीं छिप नहीं सकती है."

मेरी माँ ने आह भरी और कहा, "तुम्हें उसे जाने देना चाहिए."

समीर ने सिर हिलाया और कहा, "इसके अलावा, वो हमारा पूरे घर खा गई थी."

मैंने उसकी तरफ गुस्से देखा. "तुम्हें खुशी है कि वो चली गई!" मैंने आरोप लगाते हुए कहा.

समीर ने सर हिलाया. "वो एक हाथी है," उसने कहा.

"वो मेरा हाथी है," मैंने उत्तर दिया. मुझे पता था कि मेरा परिवार नहीं समझेगा. उन्हें मेरे जैसे, भुवना पसंद नहीं थी.

लेकिन मैं जिद्दी थी. "हमें उसे ढूंढना ही होगा," मैंने कहा. "और मुझे पता है कि वो कहाँ होगी."

मेरे पिता ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं.

"रानी चोला ने उसे चुरा लिया है!" मैंने घोषणा की.

मेरी माँ दुखी लगीं. "उस हालत में, हमें वो कभी वापस नहीं मिलेगी," उन्होंने कहा.

फिर मैं भुवना को चुरा लूंगी, मैंने सोचा. मैं उसे पुकारने के लिए गई. "मारू......!"

लेकिन कोई जवाब नहीं आया.

उस रात, जबकि मेरा परिवार सो रहा था, मैं चुपके से घर के बाहर निकली और भुवना की खोज में चली.

राजधानी, यूरेउर, बहुत दूर नहीं थी. लेकिन जितना मैं चली, वो मुझे उतनी ही दूर लगी. सड़क पर छोटे-छोटे साये मुझे बड़े, डरावने राक्षसों की तरह लगे.

हर बार जब मैंने कोई आवाज़ सुनी तो मैं सड़क के किनारे ऊंची घास में छिप गई. मुझे पता था कि अक्सर चोर रात में यात्रा करते थे.

मैंने सोचा कि अगर मेरा अपहरण कर लिया गया तो क्या होगा? क्या मेरा परिवार मुझे खोजेगा? मैंने सोचा. क्या समीर मेरी परवाह करेगा?

सुबह का सूरज यूरेउर पर उग आया था. उससे राजा का महल जगमगा उठा था.

महल के चारों ओर भीड़ जमा थी. ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी उत्सव की तैयारी कर रहे हों. महल के दरवाजों के बाहर सड़क पर कुछ नर्तकियां नाच रही थीं. आम तौर पर मैं उन्हें देखने के लिए रूकती. लेकिन आज मैं नहीं रुकी. मुझे भुवना को ढूंढना जो था.

"मुझे रानी चोला से बात करनी है," मैंने महल के गार्ड से कहा.

उनमें से एक हंसा. फिर उसने मेरे पुराने कपड़े और गंदे बालों को देखा. "रानी तुम जैसी किसी लड़की के साथ कभी नहीं बात करेंगी," उसने कहा.

"इसके अलावा," दूसरे गार्ड ने जोड़ा. "वो एक परेड की तैयारी कर रही हैं."

"मैं उनका इंतजार करूंगी," मैंने कहा. फिर मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा. "क्या वह हाथी पर सवारी करेंगी?"

लेकिन पहरेदारों ने मेरी अनदेखी की.

किसी ने मेरी मदद नहीं की. गार्ड ने नहीं. मेरे माता-पिता ने नहीं. समीर ने भी नहीं. अब मुझे अपने ही दम पर कुछ करना था.

भुवना की चाल

घंटों तक मैं तेज धूप में इंतजार करती रही. अंत में परेड शुरू हुई. परेड का नेतृत्व नर्तकियों ने किया. वे अपने हाथों में सोने की चूड़ियाँ पहनकर नाचीं. उनकी रंग-बिरंगी पोशाकें घूम रही थीं. मैं उनके नृत्य से अपनी आँखें हटा नहीं सकी. मेरे पैर भी थिरकने लगे. मैं भी उनके साथ नाचना चाहती थी.

"नहीं," मैंने खुद से कहा. "मुझे रानी को लगातार देखते रहना चाहिए."

मैंने अपनी आँखें नर्तकियों से दूर हटाईं. तब मैंने भुवना को देखा. पहले मुझे वो भुवना नहीं लगी. उसकी त्वचा चिकनी और साफ थी. उसने सिर पर नगों से जड़ा एक कपड़ा बंधा था. उसकी पीठ एक रेशम के कालीन से ढंकी थी.
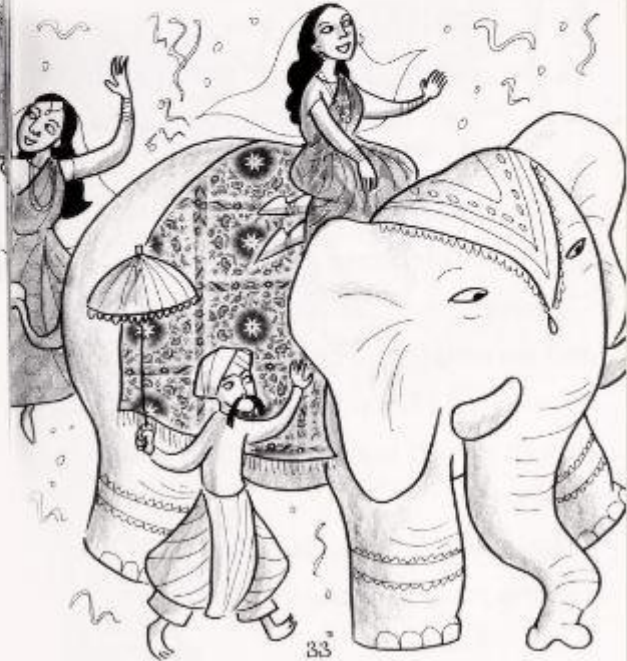
वो एक शाही भुवना थी. अब वो मेरी भुवना नहीं थी.

रानी चोला भुवना की पीठ पर बैठीं, मुस्कुराते हुए भीड़ की ओर हाथ लहरा रही थीं. रानी ने हवा में एक सोने का छल्ला फेंका. भुवना ने उसे झट से अपनी सूंड से पकड़ लिया. यह देख भीड़ ने तालियां बजाईं.

भुवना ने अपने कान फड़फड़ाए. मैंने उसका मुस्कुराता हुआ मुँह देखा. वो खुश थी.

मुझे लगा कि मुझे उसे जाने देना चाहिए. मैं वहां से जाने को मुड़ी. फिर मैंने उसे एक आखिरी बार देखने का फैसला किया. मैंने एक गहरी सांस ली और सबसे लंबे और जोर से हाथी की आवाज़ निकाली.

"मारू......." मैं चिल्लाई.

भुवना ने चलना बंद कर दिया. उसने अपना सिर इस तरह घुमाया और वो मुझे ढूंढ रही हो. लेकिन वहां बहुत भीड़ थी. वो मुझे देख नहीं पाई.

"रारू.......!" उसने मुझे वापस बुलाया.

मैं उसकी आवाज का दुख पहचान सकती थी. उसे मेरी बहुत याद आ रही होगी!

"आगे बढ़ो अवनि!" रानी ने आदेश दिया. अवनि! वो उसका सही नाम नहीं था. उसका नाम तो भुवना था.

भुवना ने रानी की बात नहीं मानी. मैंने उसकी आँखों में थोड़ी शरारत देखी. भुवना ने एक कदम पीछे लिया. वो एक आधे गोले में घूमी.
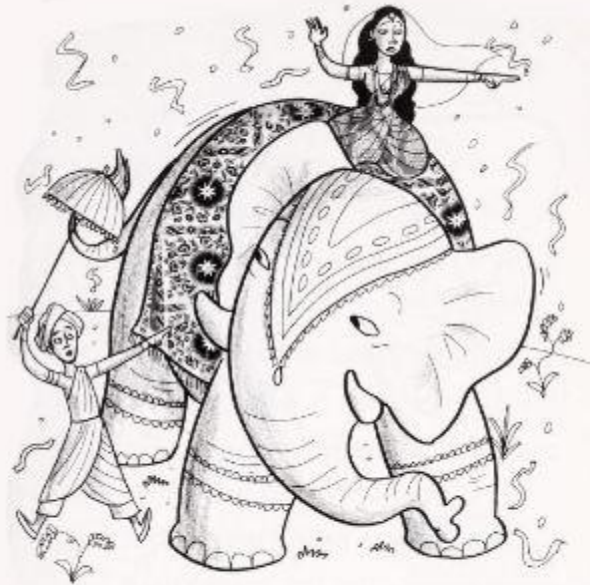
"मुड़ो!" रानी चिल्लाई. वो कुछ भयभीत दिखी.

भुवना ने अपना सर झुकाया. वो फिर से आधे गोले में घूमी. उसने फिर एक और कदम पीछे लिया.

"नहीं आगे!" रानी चोला चिल्लाई. फिर भुवना एक ओर जाकर खड़ी हो गई.

उसने अपना सिर घुमाया और अपनी पीठ पर सवार रानी को देखा.

"तुम गलत तरीके से चल रही हो," रानी ने कहा.

भुवना फिर एक गोले में घूमी.

"तुम एक शरारती हाथी हो!" रानी ने डांटा.

भुवना फिर से एक ओर जाकर खड़ी हो गई. वो वहां रुकी और रानी की स्वीकृति का इंतजार करने लगी.

रानी अब चुप थी. भीड़ भी चुप थी. फिर कोई हँसा. उसके बाद पूरी भीड़ हँसने लगी.

रानी चोला का मुँह ऐसे हिला जैसे वो भी हँसने वाली हों.

"भुवना!" मैं चिल्लाई. मैं भीड़ को धक्का देकर बाहर आई. मैं दौड़कर अपने हाथी के पास पहुँची. उसने अपनी सूंड से मुझे अपने करीब लिया. मुझे लगा कि मैंने उसकी आंख में आंसू देखे, हालांकि मुझे पता था कि हाथी कभी रोते नहीं हैं.
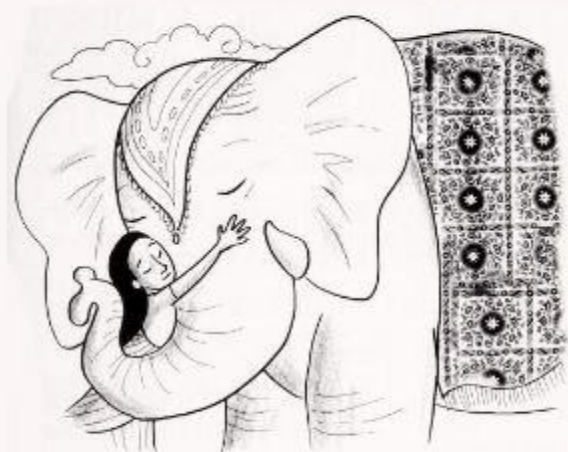
मैंने भुवना की सूंड को सहलाया, और उसने मुझे ऊंचा उठाया. उसने मुझे बिल्कुल अपने बच्चे की तरह ही ऊपर उठाया. भीड़ ने खूब तालियां बजाईं.

लेकिन मैंने उनकी परवाह नहीं की. मैंने रानी को घूरकर देखा. "तुम!" मैंने उनकी ओर अपनी उंगली से इशारा करते हुए कहा. "तुमने मेरा हाथी चुराया है!"

"कोई भी रानी से इस तरह नहीं बोलता है!" रानी ने कहा.

गार्ड आगे बढ़े, उनकी तलवारें उठीं. जैसे कि उसे पता था कि मैं खतरे में हूं, भुवना ने मुझ पर अपनी पकड़ और मजबूत की.

"एक बच्चे ने मुझ पर आरोप लगाया है!" रानी चोला हंसीं. लेकिन जब उन्होंने देखा कि और कोई और नहीं हंस रहा था तो वो रुक गयीं.

मेरे दिल की धड़कन रुक गई. क्या भीड़ ने मुझ पर विश्वास किया? वे चुप थे, और कहानी सुनने का इंतजार कर रहे थे.

"तुमने मेरा हाथी चुराया," मैंने दोहराया.

"मैंने नहीं!" रानी ने कहा.
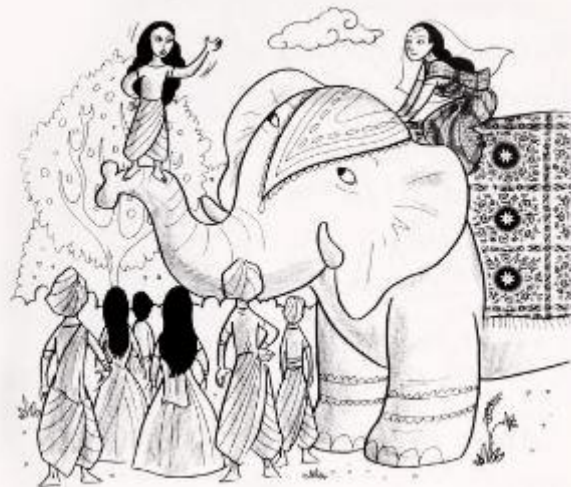
हमारे आसपास खड़े लोगों को विश्वास नहीं हुआ.

मेरी हिम्मत बढ़ी. "यह मेरा हाथी है," मैंने भीड़ से कहा. "उसने मुझे तब बचाया जब मैं एक छोटी बच्ची था. जब रानी ने मेरा हाथी देखा, तो उसने उसे अपने लिए चाहा. फिर अगले दिन मेरा हाथी गायब हो गया!"

फिर भीड़ ने रानी चोला को देखा.

रानी ने भुवना के सिर को थपथपाया. भुवना ने अपने कान फड़फड़ाए.

मैंने सोचा कि भुवना क्यों नहीं भड़की? क्या वो रानी की क्रूरता के बारे में नहीं जानती थी? क्या उसे नहीं पता था कि रानी ने उसे चुराया था?

"इस छोटी लड़की ने जो कहा है वो सच है," रानी ने मेरी ओर मुस्कुराते हुए कहा. उनकी मुस्कुराहट दयालु थी, मतलबी नहीं थी.

मैं रानी को हैरानी से देखती रही.

"लेकिन उसकी कहानी के कुछ हिस्से गायब हैं," रानी ने कहा. "जब मैंने उसे पहली बार देखा तो मुझे अवनि से प्यार हो गया. वो बहुत सुन्दर है."

"उसका नाम भुवना है," मैंने रानी को टोका.

"अवनि, भुवना, उससे क्या फर्क पड़ता है?" रानी ने पूछा.

मैं गुस्से में थी. "रानी, चोर है क्या उससे फर्क नहीं पड़ता है?" मैने कहा. पहरेदारों ने अपनी तलवारें उठा लीं.

मुझे पता था कि मैं बहुत आगे बढ़ गई थी.

"मुझे अवनि से प्यार है .. भुवना," रानी ने कहा. "वो बहुत सुन्दर है. उसकी त्वचा हल्की भूरी है. वो सच में एक राजसी हाथी है."

भुवना की आंखें नीचे कीं, जैसे वो प्रशंसा से शर्मिंदा हो.

"अपनी बात जारी रखें," मैंने रानी को घूरते हुए कहा.

"मुझे कोई आदेश नहीं दे सकता है. खासकर एक गरीब गांव की लड़की!" रानी चोला अब गुस्से में थी, लेकिन वो चकित भी दिख रही थी.

"जब मैंने हाथी को देखा, तो उसके बाद से मैं उसके बारे में सोचना बंद नहीं कर सकी," रानी ने कहा.

मेरा दिल धड़कने लगा. काश मैं उस दिन भुवना के साथ होती!

"मैं हाथी को निहारते हुए खड़ी थी. उसने मुझे हँसाया. वो बहुत शरारती और सुंदर है. जब मैं एक लड़की थी तो मैं खुद भी वैसी ही थी."

फिर रानी ने मेरी तरफ देखा. "और कुछ-कुछ तुम्हारी तरह भी," उन्होंने कहा.

मैं शर्मा गयी.

"मैंने हाथी को चुराया नहीं. मैंने उसे खरीदा है," रानी ने कहा.

आश्चर्य से मैं कहीं नीचे न गिर जाऊं इसलिए मैंने भुवना के धड़ को कसकर पकड़ा.

"आपने उसे खरीदा है?" मैंने दोहराया. "किस से?"

रानी ने भीड़ में नीचे देखा. "उससे!" उन्होंने इशारा करते हुए कहा. मैं देखने के लिए मुड़ी.

"तुम!" मैं चिल्लाई. वहाँ मेरा भाई समीर खड़ा था.
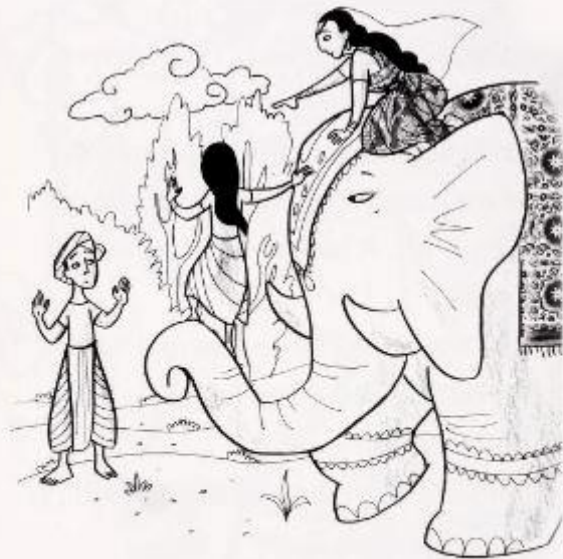
नाचने का एक मौका

समीर ने छुपने की कोशिश की. लेकिन मैंने उसे पहले ही देख लिया था.

"क्या यह सच है?" मैंने उससे पूछा. समीर ने अपने पैरों की ओर देखा.

"यह सच है, लाली," उसने जवाब दिया.

ऐसा लगा जैसे मेरे गले में एक बड़ी गांठ अटक गई हो. उसे निगल पाना संभव न था.

"क्यों?" मै फुसफुसाई.

"भुवना को रखने की हमारी औकात नहीं थी," समीर ने समझाया. "उसे अपने चारों ओर जो मिलता वो सब कुछ खाती थी. वो कोई काम नहीं करती थी. वो एक पालतू जानवर जैसी ही थी. हम जैसे लोगों की हाथी को पालतू जानवर जैसे रखने की क्षमता नहीं थी."

"लेकिन मैं वो कर सकती हूँ," रानी ने कहा. लेकिन अब उनकी बात कोई नहीं सुन रहा था.

"वो एक पालतू जानवर से कहीं अधिक है. उसने मुझे तब बचाया जब मैं एक बहुत छोटी बच्ची थी!" मैंने तर्क दिया.

समीर ने सिर हिलाया. "हमारे माता-पिता जानते हैं कि तुम उससे कितना प्यार करती हो," उसने कहा. "इसलिए उन्होंने उसे अपने पास रखा. वे तुम्हें खुश करने के लिए कुछ भी करेंगे."

समीर ने अपना सीना फुलाया. वो खुद को अपनी उम्र से ज़्यादा दिखाने की कोशिश कर रहा था.

"मैंने अपने परिवार को बचाया," समीर ने कहा.

"मैंने भुवना को बेच दिया."

"और उसके पैसे अपने लिए रखे!" मैं चिल्लाई.

समीर मेरा भाई था, लेकिन मैं उससे प्यार करती थी यह मुझे नहीं पता था. मैं भुवना की सूंड से फिसलकर अब सड़क पर आ गई. अब मैं अपने भाई के सामने खड़े होकर उसे घूर रही थी.

"मैंने पैसे नहीं रखे," समीर ने कहा. "मैंने वो पैसे माता-पिता को दिए जिससे वो तुम्हारे लिए नए कपड़े खरीद सकें."

"नए कपड़े?" मैं हांफने लगी. मैंने अपने कपड़ों को देखा. वे गंदे और पुराने थे. पर वो सबकुछ ठीक था.

समीर का चेहरा लाल हो गया. "नृत्य के लिए कपड़े," उसने समझाया. "मुझे लगता था कि अगर तुम्हारे पास अच्छे कपड़े होते, तो तुम एक अच्छी नृतकी बन सकती थीं. फिर तुम्हारे सपने सच होते."

यह सुनकर मेरे आँसू छलक आए.

"मैं भुवना के बिना कभी खुश नहीं रह सकती थी. नर्तकी बनने के बाद भी," मैंने कहा.

समीर ने सिर हिलाया और कहा, "हाँ, इसीलिए माता-पिता ने तुम्हें खोजने के लिए मुझे भेजा. उन्होंने मुझ से भुवना को वापस खरीदने को कहा."

फिर समीर ने मुट्ठी भर सोने के सिक्के रानी को दिए.

मैंने भुवना के विशाल, मोटे पैर को थपथपाया. उसने मुझ देखने के लिए अपना सर झुकाया. "अलविदा," मैंने कहा. फिर मैंने मुड़कर समीर की बांह पकड़ी. "चलो, अब चलते हैं."

"रुको!" रानी चोला चिल्लाई.

मैं एकदम सहम गई. मैं भूल गई थी कि मैंने रानी को एक झूठा और चोर बुलाया था. क्या अब मुझे सजा होने वाली थी?

रानी ने अपना सिर हिलाया. "देखो सौदा, सौदा होता है," उन्होंने कहा. "भुवना अब मेरी है."

मेरे गले में गांठ अब बढ़ती जा रही थी. मुझे पता था कि समीर सही था. मैं भुवना को अपने पास नहीं रख सकती थी. महल में, भुवना को वह सब खाना मिलेगा जो उसे पसंद था. उसका अच्छा ध्यान भी रखा जाएगा. अब मुझे उसे जाने देना चाहिए.

लेकिन जब मैं घूमी तो रानी मुस्कुरा रही थी. "समीर, मैं चाहूंगी कि तुम भुवना की देखभाल करो," उन्होंने कहा. "उसके अस्तबल की सफाई करो और उसे खिलाओ-पिलाओ."

समीर ने खुशी से अपना सिर हिलाया.

फिर रानी ने मेरी तरफ देखा. "तुम कहती हो कि तुम एक नर्तकी हो?" उन्होंने पूछा.

मुझे शर्म आई. "मैं ... मैं एक नर्तकी बनना चाहती हूं," मैंने जवाब दिया.

रानी ने अपनी बाहों को बाँधा और कहा, "मुझे नाचकर दिखाओ," उन्होंने मांग की.

नाच दिखाओ! मैंने सोचा. मैंने अपने परिवार के अलावा कभी किसी के लिए नृत्य नहीं किया था.

समीर ने मुझे कोहनी मारी. भुवना ने मुझे अपनी सूंड से छुआ.

मैंने अपना थूक निगला और फिर किनारे की ओर कुछ कदम बढ़ाए. फिर मैं घूमी और मैं सब दर्शकों के सामने झुकी. अन्य नर्तकियों को मैंने वैसा करते हुए देखा था. भीड़ ने खूब तालियां बजाईं.

रानी चुप रही. "बुरा नहीं है. लेकिन बहुत अच्छा भी नहीं है. लेकिन शायद कुछ ट्रेनिंग के बाद....."

समीर ने अपने हाथ मेरे कन्धों पर रखे. पहली बार समीर ने मुझे गले लगाने की कोशिश की थी.

तब रानी चोला मुस्कुराई. "मैं तुम्हें पसंद करती हूं, लाली," उन्होंने कहा. "तुम बहुत जिद्दी हो."

"तुम जिनसे प्यार करती हो तुम उन लोगों के लिए कुछ भी करोगी," उन्होंने कहा. "मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे महल में आकर रहो और नृत्य करना सीखो."

और इसी तरह मैं - यानि लाली एक राजसी हाथी नृतकी बनी.

मुझे भुवना के साथ नृत्य करते हुए देखने के लिए राज्य भर से लोग आए. मैंने भुवना की पीठ पर और उसके सिर पर नृत्य किया. मैंने उसकी उठी हुई सूंड पर हाथ फेरा.

मुझे नृत्य देखने आई भीड़ से प्यार मिला. लेकिन सबसे ज्यादा गर्व मुझे अपने माता-पिता और समीर के चेहरे की ख़ुशी देखकर हुआ.

अंत के शब्द

प्राचीन भारत में पशु

प्राचीन भारत के सभी जानवरों में हाथी सबसे अधिक सम्मानित थे. प्राचीन भारतीयों ने कई चीजों के लिए हाथियों का इस्तेमाल किया. हाथियों ने इमारतों के निर्माण में मदद की. उनका उपयोग युद्ध में भी किया जाता था. हाथियों ने सेना के सामने मार्च किया और बाधाओं को रौंदते हुए रास्ता साफ किया.

जंगली हाथियों को अपने हाथी-दांत के शिकार का खतरा था. हाथी-हाथी दांत का इस्तेमाल गहने, फर्नीचर और उपकरण बनाने के लिए किया जाता था.

कई प्राचीन शासक शाही हाथी रखते थे. शाही हाथी को उसके विशेष लक्षणों के लिए चुना जाता था, जैसे कि हल्के-भूरे रंग का, या लगभग सफेद. शाही हाथी को शाही खजाना माना जाता था.

एक और शाही खजाना स्लेटी रंग का घोड़ा था. घोड़े की विशेष अस्तबल में देखभाल की जाती थी. राजा और रानी रोजाना राजमहल में घोड़े से जाते थे.
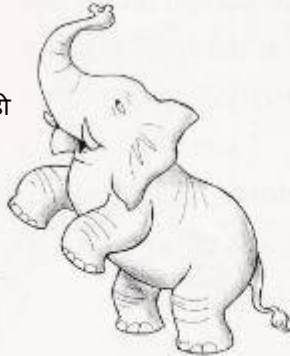
आम लोग घोड़ों का इस्तेमाल परिवहन के लिए करते थे. सैनिक घोड़ों पर चढ़कर युद्ध लड़ने जाते थे.

प्राचीन भारत में गाय का भी सम्मान किया जाता था, ज्यादातर उसके दूध के लिए. गाय को जीवन दाता माना जाता था, क्योंकि पनीर और अन्य खाद्य पदार्थ गाय के दूध से बनाए जाते थे. किसी अन्य व्यक्ति की गाय को मारना प्राचीन भारत में एक गंभीर अपराध था. गौ हत्यारों को हर एक गाय के लिए बीस गायें वापस देनी पड़ती थीं. अगर उनके पास देने के लिए कोई गाय नहीं होती, तो उन्हें जेल भेजा जाता था.

अन्य जानवरों को पालतू जानवर के रूप में रखा जाता था. बिल्ली, मोर और बत्तखें आम भारतीय पालतू जानवर थे. एक अन्य आम पालतू चिड़िया तोते को अक्सर खतरे की आशंका से बचने और घरवालों को चेतावनी देने के लिए पाला जाता था.

अंत